Indian J. Soc. & Pol. 11 (02):59-60:2024 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
February-June 2023 (31 July 2024) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

उत्तराखण्ड आन्दोलन एवम् जनपद चमोली की महिलाओं की भूमिका

सुबोध सिंह[1], यशवंत सिंह[2]

[1]सहायक प्राध्यापक,राजनीति विज्ञान विभाग,राजकीय महाविद्यालय नन्दासैंण, उत्तराखण्ड, भारत
[2]सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग,राजकीय महाविद्यालय नन्दासैंण, उत्तराखण्ड, भारत

ABSTRACT

मानव की यह स्वाभाविक प्रकृति है कि जब कभी उसकी इच्छाओं आवश्यकताओं परम्परागत मूल्यों अथवा कुशलता को दूसरे व्यक्तियों के द्वारा मान्यता प्राप्त नही होती है तो वह आन्दोलन, विरोध, प्रदर्शन, घेराव, हडताल आदि करके अपने विरोध या सहमति का प्रदर्शन करते हैं, ये सभी माध्यम सक्रियता को अभिव्यक्त करते है। सक्रियता का स्तर व्यक्तियों में अलग–अलग हो सकता है। बहुधा यह देखा जाता है कि पुरूषों की तुलना में महिलाएं राजनीतिक गतिविधियों में अधिक रूचि नहीं रखती है अथवा उनकी सक्रियता राजनीतिक क्षेत्र में सामान्यतः कम ही रहती है। इसी कारण महिलाओं के पक्ष में कई कानून, नीतियां एंव राजनीतिक प्रयासों के बावजूद भी राजनीतिक क्षेत्र में जनसंख्या के अनुपात में महिला नेतृत्व व प्रतिनिधित्व का प्रतिशत आज भी कम है। यद्यपि इसमें कोई दोराय नहीं है कि आज के युग में महिलाएं केवल अपने ज्ञान, कौशल एवं क्षमताओं में ही वृद्वि नही कर रही है वरन् हर एक क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिशचित कर रही है ।

KEYWORDS: *उतराखण्ड, पृथक राज्य आन्दोलन, महिला आन्दोलन, चमोली*

सन् 1994 में होने वाले ऐतिहासिक उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन की प्रमुख विशेषता, उसमें महिलाओं की अभूतपूर्व व स्वतः स्फुर्त भागीदारी थी। बेरोजगारी की मार से पलायन के लिए मजबूर पुरूष की चिन्ता तथा बच्चों के भविष्य पर लग रहे प्रश्न चिन्ह ने महिलाओं को आन्दोलन करने के लिए सड़कों पर ला खड़ा किया। मात्र 1 से 5 प्रतिशत की ओ०बी०सी० जनसंख्या वाले उत्तराखण्ड पर 27 प्रतिशत आरक्षण थोपे जाने से क्रोधित हुई जनता के द्वारा किया गया आंन्दोलन ही आरक्षण विरोधी आंन्दोलन के रूप में प्रारम्भ हुआ, लेकिन धीरे–धीरे सत्ताधारियों की चालाकियों एवं दमनकारी नीतियों के कारण यह उत्तराखण्ड आन्दोलन में बदल गया। ''आज दो अभी दो उतराखण्ड राज्य दो'' के नारे ने युवा वर्ग, स्त्री, पुरूष सभी को इस स्वतः स्फूर्त आन्दोलन का हिस्सा बना दिया। इस आन्दोलन में अनपढ़ व सुदूरवर्ती क्षेत्रों की महिलाओं की भागीदारी व उनके बलिदानों से प्रभावित होकर महिलाओं को मातृशक्ति का दर्जा भी दिया गया। पृथक उतराखण्ड की मांग कर रहे आन्दोलनकारियों को यह विश्वास था कि उनके अपने राज्य में बच्चों के लिए रोजगार के असंख्य अवसर उत्पन्न होगें व जल, जंगल व जमीन पर उनके अधिकार सुरक्षित होंगे। इसी कारण से आंदोलन के दौरान हर जगह महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने आन्दोलन को एक नया उत्साह व गति दी।(सिंह,1988, पृ037)

सभा–सम्मेलनों के माध्यम से महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। महिलाओं के द्वारा कई बार धारा– 144 तोड़कर प्रशासन व पुलिस से भी लोहा लिया गया। आन्दोलन के दौरान महिलाएं पुलिस के उत्पीड़न का शिकार भी हुई। लाठियां खाकर, जेल जाकर व गोलियां खाकर शहीद हुई महिलाओं में **'हंसा धनाई'** व **बेलमती चौहान** का नाम उत्तराखण्ड आन्दोलन में सर्वोपरि है।

महिलाओं की सक्रियता का परिचय 21 सितम्बर 1994 को अलकनन्दा घाटी (श्रीनगर गढवाल) में श्रीयंत्र टापू पर देखने को मिला। यहां पर महिलाओं की आन्दोलन में भागीदारी एक बार फिर स्तब्ध कर देने वाली थी। जो महिलायें कठिन परिश्रम कर परिवार के लिये कृषि कार्य, पशुओं के लिए घास, चुल्हा जलाने के लिए लकडियां आदि एकत्र करने का कार्य करती थी वे भी राज्य आन्दोलन की मांग को लेकर सड़कों पर उतर आयी थी। यह न केवल आश्चर्यजनक घटना थी वरन् महिलाओं की सक्रियता की भी प्रतीक थी। 2 अक्टूबर,1994 को मुज्जफरनगर कांड, जिसमें पहाड़ के सुदूरवर्ती क्षेत्रों से देश की राजधानी दिल्ली में उत्तराखण्ड की मांग के लिए प्रदर्शन में भाग लेने जा रही महिलाओं का उत्पीड़न किया गया व कई लोग इस घटना में मारे गए। महिलाओं के मनोबल को तोड़ने का यह घृणित प्रयास प्रशासन द्वारा किया गया, परन्तु इस अपमान के बाद भी राज्य की लडाई के लिए महिलाएं चुप नहीं बैठी। इसका विरोध करने के लिए 23 अक्टूबर 1994 को सम्पूर्ण कुमांऊ की महिलाएं नैनीताल में जुटी व 15 नवम्बर 1994 को भी उत्तराखण्ड के कौने–कौने से महिलाओं का सैलाव नैनीताल में उमड़ा। आन्दोलन को एक वैचारिक रूप देने की आवश्यकता को महसूस करते हुए महिलाओं ने संगठित होने का फैसला किया, और 19 दिसम्बर 1994 को उत्तराखण्ड महिला मंच का औपचारिक गठन किया। कैसा होगा राज्य हमारा सदा इसी पर बहस करेगें।(पाण्डे,1937,पृ032) सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के जिलों में महिलाओं ने इस मंच के अन्तर्गत राज्य मुद्दों को लेकर गोष्ठियों (शाह,1972,पृ049)व सम्मेलनों का आयोजन

1: Corresponding Author

किया। जुलूस निकाले तथा मुज्जफरनगर कांड के दोषियों को सजा देने की मांग को लेकर 2 अक्टूबर 1998 को दिल्ली में भी प्रदर्शन किया। राज्य गठन हेतु महिलाओं के साथ–साथ क्षेत्रवासियों ने भी एक लम्बा संघर्ष किया।

इस संघर्ष हेतु कई समितियां, संगठन, संघ एवं परिषदें बनायी गई, जिसमें मुख्यतः उत्तराखण्ड संयुक्त छात्र संघर्ष समिति, उत्तराखण्ड युवा छात्र संघर्ष समिति, प्रगतिशील महिला मंच, नारी संघर्ष समिति, उत्तराखण्ड महिला मोर्चा, पवर्तीय कर्मचारी संगठन उत्तराखण्ड भूतपूर्व सैनिक संगठन, उत्तराखण्ड जनता संघर्ष मोर्चा, उत्तराखण्ड महासभा, उत्तराखण्ड राज्य लोकमंच आदि अन्य संगठनों ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई।(सिंह,2003,पृ02) जनपद का जिला मुख्यालय गोपेश्वर तो आंदोलन का केन्द्र बिन्दु रहा है पर कर्णप्रयाग, जोशीमठ, रुद्रप्रयाग, गैरसैंण, नारायणबगड थराली, नागनाथ पोखरी ऊखीमठ एवं अगस्त्यमुनि जैसे नगरीय क्षेत्र की उपलब्धि भी कम नहीं रही। ग्रामीणों का सैलाब जब सडकों पर उमडा तो प्रशासनिक अधिकारियों के हाथ–पांव फुल गए। जनपद के जन–जातीय और भारत–तिब्बत सीमा पर बसे गांव के लोगों की आंदोलन में भागीदारी उल्लेखनीय रही है।(नेगी,2005,पृ034) उत्तराखण्ड आन्दोलन में मातृशक्ति ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। इसी प्रकार दिल्ली रैली में शामिल होने के लिए हजारों महिलाऐं चूल्हा–चौका छोड़कर रैली में जा रही थी। मुज्जफरनगर में पुलिस ने जलूस को रोका और महिलाओं और पुरुषों पर लाठीचार्ज करने लगी पुलिस के दमन चक्र से बचने को महिलाएं ज्यों ही खेतों की तरफ भागी, वहां खाकी वर्दी में छिपे कुछ दरिंदो ने कुछ को अपनी हवस का शिकार बनाया। इसी के चलते गौलीकांड़ व लाठीचार्ज के बीच पुलिसवालों ने महिलाओं के साथ शर्मनाक व्यवहार किये।(नेगी,2004 पृ028)

मुज्जफरनगर कांड का वृतान्त सुनाते हुए एक महिला ने कहा हमारी इज्जत लुट गयी। क्या सजा मिलेगी उन्हें जो उन्हें नहीं करना था वह उन्होंने कर दिया। खाकी वर्दी में इस दिन रामपूर तिराहें पर तैनात विदेशी लोगो ने भी ऐसा अत्याचार नहीं किया होगा औरतों पर, यह कहना था जनपद चमोली के पोखरी की एक रोती महिला का, जो उस काली रात में पी०ए०सी० और पुलिस के हवसी दरिदों के अत्याचार की शिकार हुई।(बुडाकोटी,1994–95, पृ0 31–32) महिला संगठन की अध्यक्ष कौशल डबराल का कहने तर्क यही था कि अधिकांश ज्यादतियाँ महिलायों के साथ ही हुयीं ज्यादतियों की अपनी बात को वे यह कहकर जायज ठहराती है कि चमोली की महिलाओं के साथ ज्यादा हुआ, क्योंकि उनकी बस सबसे आगे थी और चमोली की महिलाओं का कहना था कि हमें तो पुलिस थाने में ही ले गई थी। इस पूरे क्षेत्र में महिलाओं से बातचीत के बाद कहा जा सकता है कि महिलाऐं विभिन्न कारणों से आपबीती को जुबान पर लाने को तैयार नहीं थी। इनकी मानसिकता का पता इसी से लग जाता है। जनपद चमोली कुछ असरदार व्यक्तियों की करीब ती घंटे की कोशिशों के बाद वे आपबीती कहने को तैयार हूई।

निष्कर्ष

पिछले 80 वर्षो में भारत में महिलाओं ने विभिन्न मुद्दों को नारीवादी नजरिये से विश्लेषित करते हूए संघर्ष किया है। समाज में व्यस्त हिंसा पितृसत्ता, असमानता अन्याय और दमनकारी नीतियों को बदलने के आंदोलन कों नेतृत्व दिया हैं। परन्तु महिला आन्दोलन का लक्ष्य केवल उपरोक्त उद्देश्यो को ही प्राप्त करना नहीं है। वरन् महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से भी सक्रिय बनाने से है। भारतीय सन्दर्भ में महिला आन्दोलन पर्याप्त रूप से विकेन्द्रीकृत रहे हैं तथा विभिन्न स्तरों पर विभिन्न महिला संगठनों द्वारा चलाये जाते रहे हैं। स्वायत्त स्वरूप वाले महिला संगठनो का प्रमुख ध्येय पश्चिमी महिला आन्दोलन के समान महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता लाना है। यद्यपि वर्तमान उत्तराखण्ड की महिलाएं अनेक आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाने के साथ–साथ मातृशक्ति के रूप में भी प्रतिष्ठित हुई है। परन्तु दुर्भागयवश उनका योगदान आज तक भी न तो परिवार की दृष्टि से महत्वपूर्ण समझा जाता है और ना ही समाज की। अतः व्यवहारिक रूप से देखा जाय तो महिलाओं का सामाजिक योगदान आज भी आमतौर पर अदृश्य ही है।

REFERENCES

सिंह उपेन्द्र कुमार (1998)–उत्तराखण्ड की खमोश वादियों में विद्रोह के नये स्वर (लेख) *नई सदी* (पत्रिका) जनवरी 1988

सांकृत्यायन राहुल– *कुमांऊ काशी वाम मण्डल* वाराणसी

पाण्डे बदरीदत (1937)– *कुमांऊ का इतिहास* अल्मोडा, प्रेमकुरी

शाह शम्भु प्रसाद (1972) *गोविन्द बल्लभ पन्त की एक जीवनी* दिल्ली राजकमल प्रकाशन

नेगी कमल (2005) यात्रा राजधानी आन्दोलन की उतराधिकारी *महिला पत्रिका प्रकाशन* नैनीताल जनवरी–मार्च 2005 अंक–15

नेगी आनन्दपाल सिंह (2004) *उतरांचल में उभरता महिला राजनीतिक अभिजन वर्ग गढवाल के सन्दर्भ में एक अध्ययन* अप्रकाशित शोध ग्रन्ध हे०न०ब०ग०वि० श्रीनगर

नेगी राकेश (2008) *उत्तरांचल में पिछले दो दशकों में महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता के कारण प्रभाव एवं सीमाओं का अध्ययन गढवाल मण्डल के विशेष सन्दर्भ में* अप्रकाशित शोध ग्रन्ध

बुडाकोटी पद्मेश (1994–95) *उत्तराखण्ड आन्दोलन का दस्तावेज* हिमालयी धरोहर अध्ययन केन्द्र